

५५२६

श्री
संबंध बहोतेरी.

संसारनी अनवस्था उपर खरेखरो
वैराग्यमय बोध.

प्रसिद्धकर्त्ता

शाहजदलु वढ्यमधोलेरावाला

अमदावाद—युनियन मुद्रायंत्रमां मुद्रित करावी.

संवत् १९५०

सन १९६४

किम्मत दोढ आनो.

प्रसिद्धकर्त्ताए सर्व प्रकारना हक
पोताने स्वांभिन राख्या छे.

मथुरा नगरीने विषे महा स्वरूपवान तथा नाजुक वयनी कुबेरसेना करीने गणीका रहेती हती. तेने एक पुत्र तथा एक पुत्री साथे जनम्यां. पुत्रनु नाम कुबेरदत्त तथा पुत्रीनु नाम कुबेरदत्ता हतुं आ गणीकाने अनंगरंगमां अडचण पडवाथी निरअपराधी वन्ने बालकोने एक काष्ठनी मंजुषा एटले पेटी तेमां रुड पाथरीने अंदर गुवाड्या अने तेमना नामनी मुद्रिका अटले वींटियो मुकी. पेटी बंध करी जमुना नदीमां वहेती मुकी. ते पेटी अष्टपहोरमां सूरिपर नगरे आवीष्टां. तेज गामना वे वेपारी नदी उपर आवेलाळे तेमनी नजरे ते पेटी पडी. तेथी वन्ने जणे कोल करार कर्यो के, पेटी मांहेथी जे नांकळे ते आपणे वहेची लेवुं एवो ठराव करी जळ मांहेथी काढी कीनारे लाव्या. अने उघाडीने जोयु तो मांहेथी वे बालको निकल्या. ते जोइ वहेपारी घणा खुशी थया. एके पुत्र लीधो अने बीजे पुत्री लीधी. तथा तेमनी विट्टियो दंरक जणे लीधी. पत्नी वहेपारी पोताने घेर गया. अनुक्रम पुत्र योग उम्मरं थतां तेना पिताये निशाळे मुक्यो. ते थोडा बखतमां घणुं ज्ञान मेळवी पुरुषनी क्षेत्र युगल कहेतां वहोतेर कळा शिख्यो; तेमज पुत्रीना मात पीताए पुत्रीने पण कन्याशाळामां जणवा मोकळी. ते पण स्त्रीभी षट वेद कहेतां चोसठ कळा शीखी; पुत्र तथा पुत्री रूप गुण अने उम्मरमां सरखांज होवाथी तेमना मात पीताए तेमनो अनोअन्य विवाह कर्यो अने मोटी धामधुम साथे.

પરણાવ્યાં. પછી રાત્રે કુબેરદત્તા સયનભુવનમાં ગઈ. ત્યાં પોતાના પતી જોડે બાજી રમવા બેઠો. રમતાં રમતાં કંથના કરેથી પાસા પડતાં આંગઝીપ મુદ્રિકા દીઠી. તેમાં કુબેરદત્ત લાંબેલું નામ વાચ્યું તેથી તે વિચારમાં પડી કે, બન્નેની વિંટીયો તથા નામ સરખું છે. અને રૂપ તથા ઉમ્મર પણ સરખી છે માટે પ્રભાતે માત પીતાને સરવે હકીકત પૂછવી. એવો ઠરાવ કરી રમત પડી મુકી. સોકાતુર થઈ સૂઈ રહી. પ્રજ્ઞાત થતાં પોતાને પિયર ગઈ. માતા પ્રત્યે પૂછ્યું કે, મારી તથા મારા પતીની વિંટી સરખીજ છે તેમ બન્નેનાં નામ પણ સરખાંજ છે. માટે અમે ક્યાંથી આવ્યાં એનો અનુજ્ઞવ અમને કૃપા કરી કહો. માતા પુત્રી પ્રત્યે કહે છે કે, મને માલમ નથો, તારો તાત જાણે છે. પુત્રીએ પિતા પ્રત્યે પૂછ્યું. ત્યારે પિતાએ નદી માંહેથી કાઢી લાવ્યા એ સર્વે વૃતાંત સુણાવ્યો. તે ઉપરથી કુબેરદત્તા સર્વે વિના સમજી પોતાના પતી પાસે જઈ સર્વે હકીકત સુણાવી અને કહ્યું કે આપણે ભાઈ બેન થઈએ, માટે આપની આજ્ઞા હોય તો હું ચારિત્ર લેઉં? પછી કુબેરદત્તની આજ્ઞાથી કુબેરદત્તા દીક્ષા ગ્રહણ કરી સાધવી થઈ. હવે કુબેરદત્તની વાર્તા ગામમાં ફેલાઈ તેથી લજ્જાને પામ્યો થકો ગામ છોડીને જતો રહ્યો. ફરતો ફરતો મથુરા નગરી જઈ પહોંચ્યો. ત્યાં વહેપાર કરતાં ઘણું દ્રવ્ય કમાયો પછી વિષય સુખની વૃત્તિ થતાં કુબેરસેના ગણીકા પોતાની જે જીનેતા છે,

तेने राखीने पोतानो सघळो पैसो तथा माद माळ मीलकत लश्ने तेने घेर रझो. एमं अनुक्रमे संसारीक सुख भोगवतां कुबेर सेनाने एक पुत्र अवतयो. पुत्र मोटो यतां निशाळे जणोछे. हवे साधवीने मास मासनी तपस्या करतां शुद्ध परिणामे अधिज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी पोतानी जनेता तथा पतीनो सर्वे संबंध समजायो. तेथी पोते उपदेश करवा माटे मथुरा नगरी जइ पहाँची अने शुद्ध मुकाम जोइने उतरी एक दीवश साधवी अवसर जोइने कुबेरसेनाने मुकामे आवे छे. त्यां कुबेरदत्त जमीने बजारमां जवा तैयार थइ उजोछे. तथा पुत्र भणवाने माटे निशाळे जवा तैयार थइ उजोछे. तथा कुबेरसेना पण पासे उजोछे. तेवामां साधवीने आवतां देखीने सर्वे नमस्कार करेछे. पछी साधवी धर्मलाभ कहीने अगाज बनेलो सर्वे वृत्तांत सुणावेछे. तेमां अनोअन्य जुगल जोड कहेतां चार जणाने बहोतेर संबंध एटले सगाइयो प्रत्यक्ष एकजवनी नीकळे छे. तो परजवनुं तो कहेबुंज थुं.!!!

आवा साधवीना उपदेशरूप संबंध सुणीने सूरिराजेंद्र कहेतां सूरिना राजा गणधर तेना इंद्र जे अरीहंत तेनुं स्मरण करीने कहेतां, तेमनी आणामां चाले तेवा मुनिने धन्यछे. एवी भावनां जावतां चरि जण धन्यमुनिनुं पद धारण करी अनेक जीवोने प्रतिबोध करी देवलोकना सुखने प्राप्त थया अने त्यांथी चविने महाविदेह क्षेत्रे सिद्धिपदने वरशे.

॥ साधवीने बालक साथे संबंध ॥ [षट् १]

॥ १ ॥ भाइ लागे.	एक माता भणी	१
॥ २ ॥ जत्रीजो लागे.	जाइना पुत्र जणी	२
॥ ३ ॥ दीयर लागे.	जरतारना जाइ जणी	३
॥ ४ ॥ काको लागे.	पीताना भाइ भणी	४
॥ ५ ॥ पुत्र लागे.	सोक्यना पुत्र जणी	५
॥ ६ ॥ पौत्र लागे.	सोक्यना पुत्रना पुत्र भणी	६

॥ साधवीने कुबेरदत्त साथे संबंध ॥ (षट् २)

॥ १ ॥ पुत्र लागे.	सोक्यना पुत्र भणी	७
॥ २ ॥ पीता लागे.	माताना भरतार भणी	८
॥ ३ ॥ ससरो लागे.	सासुना भरतार भणी	९
॥ ४ ॥ भाइ लागे.	एक माता भणी	१०
॥ ५ ॥ दादो लागे	दादीना भरतार भणी	११
॥ ६ ॥ भरतार लागे.	परण्या भणी	१२

॥ साधवीने गणीका साथे संबंध ॥ (षट् ३)

॥ १ ॥ सोक्य लागे.	भरतारनी स्त्री भणी	१३
॥ २ ॥ सासु लागे.	भरतारनो माता भणी	१४
॥ ३ ॥ भोजाइ लागे.	भाइनी स्त्री भणी.	१५
॥ ४ ॥ माता लागे.	जन्म आप्या भणी	१६
॥ ५ ॥ बहु लागे.	सोक्यना पुत्रनी स्त्री भणी	१७
॥ ६ ॥ दादी लागे.	पीतानी माता भणी	१८

॥ बालकने साधवी साथे संबंध ॥ (षट ४)

- | | | |
|---------------------|-----------------------|----|
| ॥ १ ॥ बेन लागे. | एक माता भणी | १९ |
| ॥ २ ॥ फइ लागे. | पीतानी बेन भणी | २० |
| ॥ ३ ॥ भोजाई लागे. | भाइनी स्त्री भणी | २१ |
| ॥ ४ ॥ भत्रीजी लागे. | भाइनी पुत्री भणी | २२ |
| ॥ ५ ॥ माता लागे. | पीतानी स्त्री भणी | २३ |
| ॥ ६ ॥ दादी लागे. | पीतानी सावकी माता भणी | २४ |

॥ बालकने कुवेरदत्त साथे संबंध ॥ (षट ५)

- | | | |
|--------------------|-------------------------|----|
| ॥ १ ॥ पीता लागे. | माताना भरतार भणी | २५ |
| ॥ २ ॥ बनेवो लागे. | बेनना भरतार भणी | २६ |
| ॥ ३ ॥ भाइ लागे; | एक माता भणी | २७ |
| ॥ ४ ॥ दादो लागे. | पितानो माताना भरतार भणी | २८ |
| ॥ ५ ॥ मामो लागे. | सावकी माताना जाइ जणी | २९ |
| ॥ ६ ॥ जांणेज लागे. | बेननी सोकयना पुत्र जणो | ३० |

॥ बालकने गणीका साथे संबंध ॥ (षट ६)

- | | | |
|--------------------|------------------------|----|
| ॥ १ ॥ माता लागे. | जन्म आप्या जणी | ३१ |
| ॥ २ ॥ मामी लागे, | सावकी मातानी जोजाइ जणी | ३२ |
| ॥ ३ ॥ जोजाइ लागे. | जाइनी स्त्री जणी | ३३ |
| ॥ ४ ॥ दादी लागे | पीतानो माता जणी | ३४ |
| ॥ ५ ॥ नानी लागे. | सावकी मातानी माता जणो | ३५ |
| ॥ ६ ॥ वे'वाण लागे. | बेननी सासु जणी | ३६ |

॥ કુબેરદત્તને સાધવી સાથે સંબંધ ॥ (પટ ૭)

- | | | |
|--------------------|-----------------------------|----|
| ॥ ૧ ॥ માતા લાગે. | જનેતાની સોકય જણી | ૩૭ |
| ॥ ૨ ॥ પુત્રી લાગે. | સ્ત્રીની પુત્રી મળી | ૩૮ |
| ॥ ૩ ॥ વહુ લાગે. | સ્ત્રીના પુત્રની સ્ત્રી મળી | ૩૯ |
| ॥ ૪ ॥ બેન લાગે | એક માતા જણી | ૪૦ |
| ॥ ૫ ॥ પૌત્રી લાગે. | સ્ત્રીના પુત્રની પુત્રી જણી | ૪૧ |
| ॥ ૬ ॥ સ્ત્રી લાગે. | પરણ્યા જણી | ૪૨ |

॥ કુબેર દત્તને બાલક સાથે સંબંધ ॥ (પટ ૮)

- | | | |
|-------------------|----------------------------|----|
| ॥ ૧ ॥ પુત્ર લાગે. | વિર્યથી ઉપન્યા જણી | ૪૩ |
| ॥ ૨ ॥ સાલો લાગે. | સ્ત્રીના જાઈ જણી | ૪૪ |
| ॥ ૩ ॥ જાઈ લાગે | એક માતા જણી | ૪૫ |
| ॥ ૪ ॥ પૌત્ર લાગે. | સ્ત્રીના પુત્રના પુત્ર જણી | ૪૬ |
| ॥ ૫ ॥ જાણેજ લાગે. | બેનની સોકયના પુત્ર જણી | ૪૭ |
| ॥ ૬ ॥ મામો લાગે. | સાવકી માતાના જાઈ જણી | ૪૮ |

॥ કુબેરદત્તને ગણીકા સાથે સંબંધ ॥ (પટ ૯)

- | | | |
|------------------------|---------------------------|----|
| ॥ ૧ ॥ સાસુ લાગે. | સ્ત્રીની માતા જણી | ૪૯ |
| ॥ ૨ ॥ સાલ્યાહેલો લાગે. | સ્ત્રીના જાઈની સ્ત્રી મળી | ૫૦ |
| ॥ ૩ ॥ સ્ત્રી લાગે. | ભોગવ્યા જણી | ૫૧ |
| ॥ ૪ ॥ દાદી લાગે. | પિતાની માતા જણી | ૫૨ |
| ॥ ૫ ॥ નાની લાગે | સાવકી માતાની માતા જણી | ૫૩ |
| ॥ ૬ ॥ માતા લાગે. | જન્મ આપ્યા જણી | ૫૪ |

॥ गणीकाने साधवी साथे संबंध ॥ (षट् १०)

- | | | |
|--------------------|-----------------------|----|
| ॥ १ ॥ सोक्य लागे. | जरतारनी स्त्री जणी | ५५ |
| ॥ २ ॥ बहु लागे. | पुत्रनी स्त्री जणी | ५६ |
| ॥ ३ ॥ नणंद लागे. | जरतारनी बेन भणी | ५७ |
| ॥ ४ ॥ पुत्री लागे. | उदर उपन्या भणी | ५८ |
| ॥ ५ ॥ सासु लागे. | जरतारनी सावकी माताभणी | ५९ |
| ॥ ६ ॥ पौत्री लागे. | पुत्रनी पुत्री जणी | ६० |

॥ गणीकाने बालक साथे संबंध ॥ (षट् ११)

- | | | |
|---------------------|----------------------------|----|
| ॥ १ ॥ पुत्र लागे. | उपर उपन्या जणी | ६१ |
| ॥ २ ॥ भांणेज लागे. | नणंदनी शोक्यना पुत्रजणी | ६२ |
| ॥ ३ ॥ दीयर लागे. | जरतारना जाइ जणी | ६३ |
| ॥ ४ ॥ पौत्र लागे. | पुत्रना पुत्र जणी | ६४ |
| ॥ ५ ॥ दोहीत्र लागे. | पुत्रोनी सोक्यना पुत्र जणी | ६५ |
| ॥ ६ ॥ बे'वाइ लागे. | पुत्रनो स्त्रीना जाइ जणी | ६६ |

॥ गणीकाने कुबेरदत्त साथे संबंध ॥ (षट् १२)

- | | | |
|---------------------|----------------------------|----|
| ॥ १ ॥ जमाइ लागे. | पुत्रोना जरतार भणी | ६७ |
| ॥ २ ॥ नणंदोइ लागे. | नणंदना भरतार जणी | ६८ |
| ॥ ३ ॥ भरतार लागे. | भोगव्या भणी | ६९ |
| ॥ ४ ॥ पौत्र लागे. | पुत्रना पुत्र भणी | ७० |
| ॥ ५ ॥ दोहीत्र लागे. | पुत्रोनी सोक्यना पुत्र जणी | ७१ |
| ॥ ६ ॥ पुत्र लागे | उदर उपन्या भणी | ७२ |

श्री संजय जिनराज ताज हे, और साजका काज किया,
 रखो लाज महाराज आज निवाज करो धोराज धिया;
 जन्म सफल जेना जग जाणो, कर्म कोटकु लोट किया,
 सुणो जवि संसार नातरां, जुगल जोड षट बार श्रिया;
 करी संबंध बों'तेर स्नेहथो, समकित प्याला पान कियां,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार जिया; ॥१॥

जंबुद्वीपना जरतक्षत्रमां, इंदुपुरी अनुसार जहूं,
 महा मनाहर मथुरा नगरी, नव तेरी विस्तार कहूं;
 प्रौढ प्रतापी प्रजापाल छे, सचिव सुमति साथ लहु,
 कहूं शेर शाहुकार सामटा, बसे अदारे वाम बहू;
 बाग बगोचा महेन मालियां, गोख जालो गरकाव किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार जिया ॥२॥
 बसे वाम त्यां नगर नायका, कुबेरभेना विषय बती,
 कनक कलश कुच केचुक कसिया, कटी केशरी रूप रतो;
 पर नर प्यामी बा'ल बिलासी, खान पान गुनतान गमे,
 कळा केळवी कोकतणी घणी, खांते आसन खेल रमे;
 तन मन धनका तरसो फरसी, पुरुशोकुं पे'माल किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार जिया ॥३॥
 रमता रग अनंग पलंगपें, मदन पवनको ले'र लगी;
 रहूं उदर उधान आजथी, जुन कर्मकी ज्योत जगी;
 जरी उदर उधान भाभिनी, रमे अनंग आनंद धरी,

पूरण मासे प्रसव्यां बाळक, कुंवर कुंवरो कोड करी;
 रूप अनुपम लढकी लढका लघु बयमें निज नाम दिया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥४॥
 कुबेरदत्त छे नाम कुंवरनुं, कुबेरदत्ता कहू तनियां;
 जली जोडी हे जाइ बेनकी, रुमझुम रमत आंगनियां.
 बेइया विगते एम विमासे, केम जाळनुं बाळक बे;
 पडे पोड ने नडे निशदीन, कुळ आचार नहीं अम ए.
 पान पयोधर करे आम तो, योवनका वन जाय बह्या;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥५॥
 एमज जाणी मंजुष आणी, मूस्यां बाळक बे रमतां;
 नामांकित मुद्रा बे मूकी, चूको तनय त पी ममता.
 सौण्यां छेरु सरिता वंतो, हवे हमारे काम नहीं;
 कोण मारवा मळे महीमां, राखे जेने राम जहीं.
 मेह तजीने गइ नायका, अपना कुळ आचार किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥६॥
 आवो पेटो अष्ट पोरमां, सरिता नुरिपुर शेर किनार;
 व्यवहारो दो नीर तीरपें, जेन बहाण तणो वेशार.
 निखीं छेटी निरमें पेटो, कोड कोधा कोन करार;
 मंजुषा खोजे जुव बोजे, वन्ने बाळक हे हुशियार.
 जोइ सकोमळ बाळक वन्ने, व्यवहारो विचार किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥७॥

सूत नहीं उने पूत लिया फिर, कियाके बाळु बहु जीवो;
 एक कहे तनिया विण तलखुं, उज्जय कुळमें ए दीवो.
 बुद्धिशाळीछे बाळक बभे, जणे निशाळे जाव धरी;
 थइ तनिया वय वर्ष तेरनी, कळा खरो षट वेद वरी.
 कळा कैळवी क्षेत्र युगलका भीते पुत्रने पान किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्य मुनि पद धार लिया. ॥८॥
 तनिया ताते वात विचारी, वरवा योग्य थई बाळा;
 मळे मनोहर नाथ साथ तो, कंठ ठवूं में वरमाळा.
 कुवरी लायक कुबेरदत्त छे, सुता पामशे सूख खरूं,
 तात विचारे वात विवा'नी, हवे धिरज हुं केम धरूं
 सगा संबंधी सगपण करवां, जाव धरी जेगा करिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥९॥
 कोइ कहे धन्य जाग्य जामिनी, क्यांथी कंथ मळे एवो;
 कोइ कहे चालो चोंपथो, वेंचय, मोठो मंवो.
 साजन मा'जन साकर लेवा, लोक मिल्या लाखो कोडी,
 जाइ बेन भरतार जामिनी, जुज मिली करमे जोडी.
 सगां संबंधी मिली स्नेहथी, सगपणका संक्षेप किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्य मुनि पद धार लिया. ॥१०॥
 वात विचारे तात बेटीनां, सुणो कामिनी सुखकारी;
 कंथ यांग तो थइ कुंवरी, शोजे सासरिये सारी.
 तनिया ताते वात विचारो, लग्न लहुं हुं निरधारी.

शुभ मुहुर्तनो दिवस देखिने, बोलाव्यो ब्राह्मण ज़ारी.
 जोषी जुगते ज़णे भावथी, कहो शेठजी काम किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया।११।
 शेठ. उचर्या मान दइ शुभ, ज़ले पधार्या भाव धरी;
 लग्न लेवुंछे अरे अमारे, आ तनिया वय तेर करी.
 जन्म पत्रिका जोइ जोषीथे, सुणो शेठजी ध्यान धरी;
 वर कन्याने वसंतपंचमी, गमी ज्ञानसें वात खरी.
 सुणो शेठ सारांश काढिने, आगमने अनुसार किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया।१२।
 सुणज्यो वे'वाइ वात विवा'नी, वसंतपंचमी निरधारो,
 लग्न तणी ज़ेवडमां रहेवां, मंगळ वात मने धारो,
 सगां सबंधी पत्र पाठव्या, तम आवे शोभा सारी,
 अवसर उपर आप आवज्यो, अर्ज अमारो उर धारो,
 सुणज्यो सज्जन मनहर मंडप, मीणाकारो काम किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया।१३।
 कारीगरकुं कहे शेठजी, करज्यां मंडप काम खरुं,
 धरज्यो ज्ञाझा दाम हामथी, काम किम्मती कल्पतरु,
 मूक्या काच विजोर मोरने, जोतां भूख तरस ज़ांगे,
 अनुजवथी हूं कहूं एटलुं, इंदपुरी सुणज्यो स्वांगे.
 करी कौरणी वांक वालिने, वर्णव ते किम जाय किया.
 ए सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया,।१४।

छजमां सोहे चांद चांदणी, वणो बहु शोभा सारी,
 झूके झालर जली जर्तनी, चतुर चितारे चीतारी,
 लेंस्प ललुके झुम्पर झूके, हांडी हींचोला खावे,
 दीपे दीपक ज्योत जामनी, लूपे दामनी शरमावे,
 मंडपमें विचित्र चित्रका, कहूं मित्र हूं काम किया,
 समरण मरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥१५॥
 चितर्या चौटा चोक चदणी, वन वाडी विस्तार घणो,
 चितरी चतुरा मूरपरनी, उगवमी अवतार गणो,
 पेखी प्रीते प्रिया पद्मनी, रमणीक रमणी पास पिया,
 ग्रही गुल फूल माल मनोहर, चमर कमल कर धार लिया,
 पेख्या प्रीते पंडित पढता, कहूं कदमका काम किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥१६॥
 करो कोरणो पोळ पोळोया, बाण धनुष्य तलवार धरी,
 हय हाथीनो हार ओपतो, बाघ बरु बहु जात करो,
 फाज फूलता जाम जलतां, फुल गुलाब रहां गरकी.
 आंबु जांबु केळ कदवी, तमाम जाती तरुवरकी,
 मंडपका तो महा मनोहर, प्रीते पूरण काम किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥१७॥
 हवे हकीकत कहूं जाननी, सुणज्यो सज्जन स्नह धरी,
 प्रीते पुत्रने पीठी चौळ, मानुनि मंगल गाय खरी,
 बात करे बहुवारु छाने, जइथुं जाने आज अमे, .

बाळ बुढा बहु बन्या बराते, वरमां रहेतुं केम गमे,
 एम अती अलबेला भेला, साबेला जरपूर भया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, १२०।
 बहु बेठा बगी सुखपाले, कोइ चाले यातो करतां,
 कोइतो सोहे शेज गाडीमां, कोइतो पंथे परवरतां,
 कोइ कहे मुज माफो माफक, कोइ कहे चारठ चावे,
 कोइतो रथमां रोक करीने, बेठा जाव धरी जावे,
 कोइए तो तुरंग तातारी, बहु भारी शिणगार किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया १२१।
 सोहे कस्वी पग पितांबर, पैरण अंगरखा पहेरी,
 बन्या नवलशा नाना मोटा, ओपे अलबेला लहेरी,
 ग्रही हाथमें गुलाब गोटा, शिरपर छत्री सोहेछे,
 जानैयानी जोइ जुगती, मानवनां मन मोहेछे,
 हंवे सजन सहु सुणज्यो शोजा, सामनीने शिणगार किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, १२०।
 सजी सोळ शिणगार शामिनी, मिळी वराते बहु नारी,
 मुख मलकावी मंगळ गावे, शोभेछे शामा सारी,
 लीलावटमें तगे तीलडी, गौर गुजाबी तिल गाले,
 ढाळे अंजन उभय आंखमें, चतुरा चित्रेणी चाले,
 सेंथे सिंदूर दीपे दामणी, घणी मणीका काम किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, १२१।

श्रीणा श्रांशरने जवमाला, विंलुआ पाये वाजे,
 निलम कंकण नाके नथनी. करण फूल काने छाजे,
 मृगानेणी शिरकी वेणी, कादंबी नागण काली,
 कांबी कल्लां सोहे सांकळां, चमक चमक चतुरा चाली,
 कर कल्लिने कंकण काने, लोलकतो लटकाइ दिया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥११॥
 ठमक ठमक तो नेपुर ठमके, छंदे घूघरीयो वाजे,
 गेंद गूजरी निखि नाजुक, रामा रूप राति लाजे,
 गुणवंती हथपान गोखरूं, पजेवकी प्रीती पेखूं,
 कडुं कनक कोंणीपर कामा, रूप रामा रंभा लेखूं
 कोइने हीरा हार मोतीना, कनके किम्मती काम किया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥१२॥
 कामिनी शुक चंचूक नाशिका, रूप रोहिणी कंथ कहूं,
 शामा सैयर साथ शोजती, भावे गावे गीत वहूं,
 मचकणियां तूमी तनमनीयां, उर एकावळ अलबेली,
 झूके झालरा जरमर जंघा कामिनी कोमळ बनकेली,
 कनक चूडी गजदंत गामिनी, दामनीने निज रूप दिया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥१३॥
 फूल वाळी बाळी नथ नाके, दाडम दंत कळो का'बे;
 केवी कुंजर चाल चालती, नयण वयण समता जावे.
 चाले चटके मुखने मटके, कर लटके कंचन वींटी;

जली दामणी जाल लुगाइ, जाल लोलम लेखुं लोंटी.
 आढो आंक बनीं अलवेली, मोहन वेली तेज त्रिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया॥१५॥
 जळं हळ जोत दिसे जानरडी, ज्योत प्रकामे जान तणी;
 मज्जा पन्निणी तणी प्रकाशित, जुवे चौटे नर नार घणी.
 गाम गोंदरे जान आवी ज्यां, सामैयानी तैयारी;
 करवाने आतूर वे'वाइयो, जान मान निज मन धारी.
 शोन्नीता शिणगार सजीने, सकळ सगा सामेल थिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया॥१६॥
 सामैयुं सर्वोत्तम-करवा, वे'वाइयो सहु चोंप करी;
 ठाठ माठथी चाली निसर्या, सकळ चीज तैयार करी.
 आवकार सरवेने दीधा, आदर मान करी बहुने;
 जानीवासो जोइ जुगतिनो, उतार्या साजन सहुने.
 ओछुं न पडे वे'वाइयीने, ए मतलब नीरधार किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया॥१७॥
 चतुरा चुंदडी चडी ओढवा, करी अश्व पर अश्वारी;
 मुख शोन्ना मे'ताव समी सौ, जोइ राजीछे नर नारी.
 उमंगनो उर पार जरीना, चित्तमां चतुरा बहु राचे;
 नाथ नकी मळशे मुजने मुज पूरव पुन्य फल्युं साचे.
 ज्ञाग्य फल्युं जाणीने भामिनी, आनंद अंग उतार दिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया॥१८॥

વરઘોડો વરણાગી સાથે, ચડ્યો ચતુરા ઘેર જવા,
 થન થન નાચે અશ્વ અનોપમ, વિંદે હિંદ શિણગાર નવા.
 કોટી કામ લજવે એવી જોઈ, અનુપમ મૂર્તિ કંથ તણી;
 અંતરમાં આનંદિત થાતી, અવળા નિર્લે વાર ઘણી.
 નાથ સાથ આનંદ પામવા, વિચાર અંતર આજ ક્રિયા;
 સમરણ સૂરિ રાજેન્દ્ર નામકા, ધન્યમુનિ પદ ધાર લિયા।૧૯
 વરઘોડો આંબિને દ્વારમાં. સાજન સાથે સ્થિર રહ્યો;
 છાંટ્યો છે તંબોલ શરીરે, વરને વધુ આનંદ થયો.
 આવી પોંચવા માસુ કરમાં સાહી થાઢમાં સામગરી;
 ગોર જાણે ઝમંગ આળીને, ગાય ગોરી વહુ મીત મઢી.
 ધૂંસલ મૂસલ અને રવૈયો, ત્રાક તીર સવ જમા દિયા;
 સમરણ સૂરિ રાજેન્દ્ર નામકા, ધન્યમુનિ પદ ધાર લિયા।૨૦
 મહાજન વેઠુ મઢી માંડવે, વરને નિર્લે વહુ આસે,
 સાવધાન વરતે તે સમયે, કન્યા વેસારી પાસે.
 માત તાત આનંદ ઝરમાં. લાખેણો લા'વો લેવા;
 આવી વેઠા ગોર આગલે, દાન દીકરીનું દેવા.
 મધૂપકે મંડપમાં કરીને, સવ જનકું સંતોષ ક્રિયા;
 સમરણ સૂરિ રાજેન્દ્ર નામકા, ધન્યમુનિ પદ ધાર લિયા।૨૧
 મંગલ ફેરા ફરી માહરે, આનંદિત નર નાર ધિયા;
 જ્ઞાત ભાતનાં જોજન મમકાદાર જાનને જમા દિયા.
 તૃપ્ત થયા સહુ જાનૈયા જમી, થયા રાજી વર પરણીને;

गाइ राजी गोरी थइ चित्तमां, सहु राजी सुख वरणीने,
 वे'वाइयो सहु राजी थइने, सगा संबंधी स्नेह किया;
 समरण सूरिराजेंड नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥३२॥
 जान जमाडो जुगती साथे, स्नेह चित्तमां धारीने;
 गोरी गीत अतीशय गाती, लटका करी ललकारीने.
 बखाण आप तणां वधु करती, वे'वाइने नीचा गणती;
 फुल्य मारती वडी गीतमां, आप आपनुं शुभ्र जणती.
 वे'वाण्यो बहु वा'ल धरीने, सगपणका संक्षेप किया;
 समरण सूरिराजेंड नामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥३३॥
 हरख जमण आपी होंशेथी, जान विदाय करे वा'ले;
 हळी मळी वे'वाइयो आजे, रस्तो निज घरनो झाले.
 कन्याने कंथनी साथमां, बळाववाने वा'ल धरी;
 माता दीकरीने कहे रहेजे, सासरियामां संप करी.
 एम विचारी आप अंतरे, शीखामणका दान दिया;
 समरण सूरि राजेंड नामका, धन्यमुनि पद धार लिया, ॥३४॥
 नानीछो बेटा सासरीए जनुं थनुं गुणमां मोटी;
 सलाह संपथी सुखे चालनुं, तजवी चाल सकळ खोटी.
 हती अमारे घेर अरे तुं, आज सुधी मे'मान खरे;
 चालीं पारके घेर तजी घर, ते घर ताहं चित्त ठरे.
 मात तातकी माया तजीने, सैयरका संग छोड दिया;
 समरण सूरिराजेंड नामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥३५॥

दीकरी जाणी प्रीतज आणी, कडबुं कथन नहीं कथतांथा;
 वांक पडेतो माफ करी शिख, सूधरवा उचरतांथा.
 जबुं पारके घेर प्राण मुज, त्यां रे'जे संज्ञाळीने
 सुखणी नित्ये थजे सासरे, दुरगुणने दूर टाळीने,
 छोडी देजे छोकरवादी, ज्ञान तणी धरजे वातेयां;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥३६॥
 विवेक विद्या तने शीखवी, तेने आधीन तुं रहेजे;
 कोइ आवी कडबुं कही जाये, तोय न ठपको तूं देजे.
 शाणीने सदगुणवाळी तुं, सती सर्वनी धरजे टेक;
 अहंकार उर जरी न करजे, बोली अवळो. अक्षर एक.
 दुरगुण मूळ तारा दिखमांथी, विद्या दइ विदार दिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥३७॥
 कंथ तणी तुं सेवा करजे, धरजे मनमां तेनी धाक;
 माथुं जाता फिकर न गणजे, संज्ञाळी नानुं शुज नाक.
 आखो भव तुं आधीन एने, रहेजे वेठी ताप तने;
 उलंघन करवानी इच्छा. धारीश नहीं तुं बेन मने.
 रात दिवस स्वामी सेवामां, सतीयोए बहु काम किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥३८॥
 शिख सरवे सामु ससरानी, शाणी बे'नी शिर धरजे;
 दीयर जेठ जेठाणी नणंदी, बोले ते तुं सही करजे.
 सगा संबंधी बोले कूहुं तो पण रोझ जरा मनमां;

धरीश नहीं तो सुख पामीने, मान लहीश तुं महाजनमां.
 कोइ तारापर क्रोध न करशे, तें डरगुणने दूर किया;
 समरण सूरि राजेंड्रनामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥३८॥
 शीख सारी दइने दीकरीने, बळावी स्नेहे सासरिये;
 वा'ल धरीने जान बळावी, करी पे'रामणी वे'वाइये.
 सगा संबंधी राजी थयां दील, जोइ जोडुं आ बहु वरनुं;
 मन मान्युं मा बाप बन्नेनुं, नूर जोइ नारी नरनुं.
 हवेलीमां आव्या होंशेथी, नरनारी दुख दूर थिया;
 समरण सूरिराजेंड्र नामका धन्यमुनि पद धार लिया ॥४०॥
 हेम हींचोळा हवेली मांही, सुख लेवा नर नारीने;
 हांडी झुम्मर तकता मेल्या, उमंग उरमां धारीने.
 हुकमें हाजर हजार चाकर, खमा खमा कहे खोंखारी;
 जतन करे नर नारी तणां सहु, ऋहु लक्ष्मीनी बलिहारी.
 जोइ जोडु आ उत्तम अवनि, नर नारी दिल खुश थिया;
 समरण सूरिराजेंड्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. ॥४१॥
 जमी दंपती गयां महेलमां, रजनी सुख लेवा काजे;
 अतिशयछे आनंद उरमां, जोइ काम निज दिल दाजे.
 हैये हार हीरानो सोहे, मुक्ता बेसर नाक बिषे,
 अणवट विछूं रहै उपता, अलंकार अधिका दिसे,
 पार नथी मन प्यार तणो बळी, दंपति दिल आनंद थिया;
 समरण सूरि राजेंड्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया ॥४२॥

खासी अगासी महेल विषेछे, त्यां गादी तकौया धरिया;
 पलंग ढोलिया कोच खूरसी, मखमल मशरूथी जारिया;
 जाजम कसबी कोर दीपती, बेल बूटा वरताय आते;
 श्रीमंतोनी मोज विषे जरि, गरीबनी शी होय गती. •
 बीछानां बीजां जरियानी, बहु रंगी बीछाइ दिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. ॥४३॥
 दंपतिने दिल विचार वाध्यो, प्रथम रमत रमवी बाजी;
 पासा बाजी धर्या सोगठां, रामा थइ उरमां राजी.
 मखमल बाजी विराजती शो, थइ रमवा रामा घेली;
 पासा हीरा जडित सोगठां, आनंद ठे उर अलबेली.
 धर्या सोगठां पासा पकडी, दंपति दिनमां स्थिर थिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ४४
 रसज्जर रमतां कंथ करेथी, पासा पडता चित नारी;
 जोइ मुझिका सुवर्ण केरी, निखेंछे धारी धारी,
 पोता जेवी जोइ बरोबर, मुझिका मनमां नारी;
 कुबेरदत्त लखेलुं लेखी, उर विचार वध्यो ज्ञारी.
 ज्यां आनंदे मग्न हतां त्यां, उर बेनां उदास थिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥४५॥
 रात जतां परभात थइ त्यां, गइ नारी निज मात कने;
 कोनी पुत्री हूंछुं क्यांथी आवो मुद्रा मारी कने.
 नाथ पास पण मारा जेवी, में मुझा नजरे दीठी;

कूबेरदत्त लखेलुं लेखी, लागी ज्वाळ पढी जूठी
 माटे साचुं मान मात तुं, भामिनी हुं भरतार थिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. ॥४६॥
 मात कहेतुज तात वात सहू, जाणे तें पूछो तेने.
 तुजने लाव्ही मुजने सोंपी; खरी खबरछे बहु एने;
 तात कहे सहू सुणज्यो सूता, पेटी पाणी पूर विषे.
 लीधी करमां अमे वन्नेए त्यां सुता सुत बेज दिसे;
 निरखी नाजुक वन्ने वाळक, तुज ससरो, हुं खुशी थिया;
 समरण सुरि राजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धार लिया ॥४७॥
 पुत्रो तुजने में पळोने, सुत संतोष्यो तुज ससरे;
 मुझा बे सरखी सोनानी, सांभळ वांली वात खरे.
 कुबेरदत्त दिनकर सम देखो, सगपण तारी साथ कर्युं;
 मोटो खर्च करी परणावी, बन्ने जणनुं क्लेश हर्युं.
 समंजी शाणी निज मन आणी, भाई मुज भरतार थिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धार लिया. ॥४८॥
 विचारती निज अंतर नारी, अफळ अमारो जन्म गयां;
 खरे भ्रात मुज मानो जायो, गजब गोरी हुं नाथ थयो.
 छेटे रहेवुं तेना संगथी, काळ काढवो अलग रह्यो;
 थई साधिवो रह्यो सुखमां, स्वामी लायक शीख लही.
 व्रत पंच मोटां वरतीने, सौधर्मा, गुरु शिर किया;
 समरण सूत्रि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. ॥४९॥

संजम लेइने चाली साधवी, स्वामीने सहु जाण करो;
 भ्रात भगनि आपण बे छैये, कहुंछुं वहाला वात खरी.
 कंथ मुझायोछे निज मनमां, गजब गणायो लोक विषे;
 मोहुं देखाडी शकतो ना, हरदम दिलमां शोक दिसे. •
 बहु चरचा चाली लोकोमां सहु जन हाहाकार किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. १२०।
 संजम लेइने चाली साधावे, गामांतर विहार करे;
 मासिक तप चडते परिणामे, कर्म कापवा ध्यान धरे.
 नाथ लजायो लोक लाजथी, गाम छोडी परगाम गयो;
 फरतो फरतो मथुरा मांही, धाम गोति ते गाम रह्यो.
 वसु वध्या बे'पारे झाझा, कहुं कर्मका काम किया,
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. १२१।
 माया केफे मस्त बन्योछे, वृत्ति गइ विषया सुखमां;
 राखी नायका नाणां खरची, उपन्योछे जेनी कुखमां. •
 विलास करतां वेश्या उदर, अरभक उपन्यो एक खरे;
 सूत थयोछे वर्ष सातनो, भणवा उपर भाव धरे.
 काम क्रीडा निशदीन गुजारे, सुख संपति सब जमादिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्य मुनि पद धारलिया. १२२।
 कहुं हकिकत हवे साधवी, साधन करवा शुद्ध जाते. •
 कष्ट वेठो धर्मोना मारग, भणवा लागी भली भाते;
 काम क्रोध माया मद मोडी, छोडी मोह तणी ममता,

शांत चित्त राखीने शाणी, आणी हृदय शीयळ समता;
 कर्म कापवानां साधन सह समकिते बहु सहाय थिया,
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥५३॥
 सरध धारी शुद्ध साधवी, उत्पन्न अवधि ज्ञान थयुं;
 कोण जनेता कोण कंथ ते, अवधि ज्ञाने एह लक्षुं.
 मात साथ विषया मुख लेतो, मथुरामां विलास करे;
 साधवी शोक धरे अंतरमां, ए भवसागर केम तरे.
 मथुरा जडने मळुं मातने, साधवीने अनुमान किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया ॥५४॥
 उठी साधवी उमंग धारी. प्रथमपती प्रतिबोध करुं;
 मात सुत स्वाभीने तारवा, मासकल्प हुं त्यांज ठरुं.
 समताधारो चालो साधवी. जइ पहोची मथुरा नगरी;
 पोषधशाळा पवित्र पेखी. वास रही त्यां वा'ल धरी.
 जुक्ति करीने जोयुं साधवी कुबेरमेना वास हिंया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया ॥५५॥
 मकान दिठुं निज मातानुं, पति पड्यो निज पिंजरमां;
 गाढी घोडा सकळ साह्यो, दाम धर्या गणिका घरमां.
 पती जनेता नथी जाणतो, रामा गणिने रंग रमे;
 करुं हवे उपदेश नही तो, भव सागरमें तेह जमे.
 एक दिवंसतो अवसर जाणी, साधवि गणिका द्वार गिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया ॥५६॥

सुत नीशाळे जवा नीकल्यो, बाप जतो वेपार विषे;
 गणिका पण पासे उभीछे, साधवि आवे काम किशे.
 तनय तात तरुणी तणे जण, प्रीतेथी परणाम करे;
 धर्मलाज दशने दिनताथो, साधवी सत्य वचन उचरे.
 सगपणछे ज्ञाशुं तम साथे, ए अंतर उतार दिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धारलिया. १५७।
 शिक्षा रूपे कहे साधवी, पर रमणीशुं रंग रमे,
 दमे नही निज अनंग रंगने, भव सागरमें तेह जमे.
 कहे साधवी सुण बालूडा, सगपण साचु स्नेह धरी,
 जाइ जत्रीजो देवर काको पुत्र पौत्रनी प्रांत खरी.
 सगपणका संक्षेप साधवी, षट पे'ला परमाण किया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धारलिया, १५८।
 कहे साधवी कुबेरदत्तकुं, सुण सगपण संसार तणुं;
 पुत्र पिता ससरो सुखदाइ, जाइ दादो जरतार जणुं.
 खटपट पट बोजानी कही ते, जुगतेथो लेज्यो जाणी;
 जाव धरीने भणे साधवी, विगते वेश्याने वाणी.
 सोक्य सामु जोजाइ माइ जर, बहु दादी षट तीन थिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. १५९
 बोले बाळक सुणो साधवी, सगपण साचूं ज्यो धारो;
 दादी फइ भोजाइ माइ तुं, जत्रीजी भगिनी मारी.
 वदी वेद षट कुबेरदत्तने, कहे कुंवरजी अनुसारी;

बाप बनेवी बांधव दादो, मामो मुज भाणेज भारी.
 विकथा वरजी सुणज्यो अरजी, कुंवरजी षट पंच किया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. ।६०।
 कहे कुंवरजी सुणो नायका, कर्म कथा किम जाय कळी;
 माइ मामी जोजाइ दादीने, नानी मुज वेवाण वळी.
 करजोडीने कहे कुंवरजी, अम अरजी षट खंड करी;
 कुबेरदत्त कहे सहू सुणज्यो, साधवी सगपण स्नेह धरी.
 वे'न बेटी मुज माता पौत्री, प्रिया बहु षट सात किया,
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया. ।६१।
 कुबेरदत्त तो कहे कुंवरने, सुणज्यो सुत सगपण मारो.
 मामो मुज भाणेज भाइ तुं, सुत साळो पौत्र प्यारो;
 षट कर्म तो किया खंतथी, सुणज्यो षट नव नेह गणी,
 कुबेरदत्त कुं क्या लगती हे, कुबेरसेना रामजणी.
 दादी नानी मात जापिनो, सासु साळाहल थिया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ।६२।
 कुबेरसेना कहे सगाइ, सुणो साधवी भव भारी;
 सासु साकेय सुता सुत शामा, नणदल पौत्री कहुं प्यारी.
 षटदश खटपट थइ खंतथी, भावे षट अगीयार भणुं;
 कुबेरसेना कहे कोडथी, सुणज्यो सगपण सुत तणुं.
 दीयर पौत्र दोहीत्र दीकरो, वे'वाइ मुज भाणेज भया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धारलिया. ।६३।

श्रोता सुणज्यो स्नेह धरीने, भाव धरी षट बार भणुं;
 कुबेरसेना कहे मुखथी, सगपण साचुं स्वाम-तणुं.
 पती पौत्र दोहीत्र दीकरो, जमाइ नणदोइ छे सारो;
 ए सगपणमां रही गुंथाइ, जन्म गुमान्यो में मारो.
 सुणी सगपण साधवि शिख जाणी, अंतर पट उघाह दिंया;
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धारलिया ॥६४॥
 साधवीना सगपणथी त्रूच्या, कर्मबंध हता कसिया;
 कुमति वामी सुमति जामो, धोरी धर्म विषे धासिया.
 थइ सगाइ अरे अमारें, आतो पूर्व तणा पापें;
 ज्ञान उत्पत्ति थइ हृदयमां, साधविना तष पइतापे.
 बंध मोक्षनी वारी जोवा, चित्त सरवे आतूर थिया.
 समरण सूरिराजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया।६५॥
 मोह छूट्यो माया ममतानो, समता शरिर विषे जामी;
 क्षण भंगुर सरवे सुख जाण्युं, पाप मतो पोते वामी.
 जूठी माया जाणा जगनी, विगतेथो विचार करे;
 हवे व्यर्थ रे'बुं संसारें, सोच हृदयमां आप धरे.
 सुल्लज्ज रस्तो सुख पाम्यानो, सहु शोधवा संचरिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया।६६॥
 दिक्षा लेवा डाह्या गुरुनी, पास आशथी एह गिया;
 सुणी देशना सुगुरु पासे, वेद जणे विचार किया,
 श्वेतांबर जे वेष वोरनो, लेश नहीं तेमां खामी.

मानोपेत प्रमाण करीने, धरी खरी खोटी वामी;
 व्रतपंच मोटां प्रीतेथी, उचरीने अणगार भया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥६७॥
 करे उग्रविहार प्रीतथी, फरे बोध देवा बहुने;
 वरे बधु शिव सरधा साचे, करे शुद्ध श्रावक सहुने.
 सुणो सहु श्रावक श्राविका, जूठीछे जगनी माया;
 जूठी जोरु जूठा जाया, जूठी छे अपनी काया.
 जूठू सगपण आ संसारे, ए अंतर उतार दिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धार लिया; ६८
 मात पीता मुक्त नाइ जनीजा, सबस्वारथके हे आथी;
 आइ अचानक काळ ग्रहे जब, कोइ न आवे ते साथी.
 ते माटे चेतनजी तुम तो, माया ममता द्यो त्यागी;
 श्री जिनभाषित धर्म करो धन्य धन्यमुनि पद ल्यो मागी.
 माटे मानव मान मुक्तीने मान्य सुगुरु शीख दिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धार लिया. ॥६९॥
 योनि लख चोराशी फरतां, पुन्ये मनुष्य जनम पाया;
 जोगवाइ तो मळी पुनिनी, वळी उत्तम कुळमें आया.
 माटे मानव जव पाप्मोने, करवी शुध सरधा प्राणी;
 भरवी सुगुरु शीख ध्यानमां, वरवी शिवरमणी राणी,
 करणी पार उतरणी आवे, साथ आवे जे हाथ किया.
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया. ॥७०॥

कुबेरदत्ता कुबेरदत्तने, कुंवर कुबेरसेना साथे,
 दिक्षा पाळी थया देवता, जुगळ जोड सौ संगाथे.
 खंते धर्म खरो जिनवरनो, छाप सुधर्मा ते धरशे,
 अंते महाविदेहे आवी, शिवरमणी सेजे वरशे;
 जावे ज्ञातां सुणतां स्नेहे, धोरी निर्मळ थाय धिया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका धन्यमुनि पद धार लिया।७१।
 विरचित वलयम सुत प्रीतथो, नित्य नमन जिन जोग लिया;
 सोहमगण शिरताज राजथी, अनुजव प्याला आज पिया.
 धर्म शिरोमणी धाम धोळेरा, हाल हमेरा वतन हियां—
 मरुधरने मेवाड माळवो गिरुवोगुर्जर देश जिंफा.
 लाल लेळजु राजेंद्र ले'रमां, बंध संबंध वो'तेर किया;
 समरण सूरि राजेंद्र नामका, धन्यमुनि पद धार लिया।७२।

॥ दोहा ॥

विरचित वलयम सूत ए, बंध संबंध वो'तेर;
 भणतां सुणतां भावथी, “लल्लु” लीलाले'र.

(समाप्त.)

जरा नीचे नजर तो करो ?

कुबेरदत्ताने सासरे बळावती बखते तेनी माताए शिखामण
 रूपे गायेलु गीत अहीयां दाखल कर्युंछे; ते गीत दीकरीयोने
 सासरे बळावती बखते गावा लायक छे. माटे आशा छे के,
 तमाम स्त्रीयो आवा शीखामणानां गीत शीखशे !.!.!

सासरे जती दीकरीने मातानी शीखामण.

“ आछा घुंघट ते वहुने वालेरा लागे ” ए देशी.

सासरे शाणी बे'नी संपोने रे'वुं,
सोसुससराने कडवुं के'ण न के'वुं,
बडील वचन मन लेवुं हो दीकरी. सासरे० १ ॥

आज्ञाने अनुसरोने कामज करवुं,
स्वतंत्र करतां तारे दिलमांही डरवुं;
वरवुं न काम चितमां घरवुं हो दीकरी. सासरे० २ ॥

आज सुधी रे. बे'नी अहींया पोसाणी.
माता पिताए तारो छोकरमत जाणी
पण सासरे थावुं घटे शाणी हो दीकरी. सासरे० ३

गुन्हो नजीवो अमे माफज करतां,
दिकरी जाणीने शिक्षा करवाथी डरतां,
ठपको सुधरवाने उचरतां हो दीकरी. सासरे० ४

कडवुं वचन से'वुं शांतीथी शाणो,
वदवुं न सामुं अंतर अहंकार आणो;
नहि तो जिवतर छे धूळधाणी हो दीकरी. सासरे० ५ ॥

सासरीयामां काम शुभ रीते करवुं,
भूली न बगडे काम एवुं आदरवुं;
रखे बगडे एम दिलमां डरवुं हो दीकरी. सासरे० ६ ॥

कंथनी साथे कदी कजीयो न करजे
कडवुं कथन के'तां दिलहामां ढरजे;
कारज ना कोइदी कुहुं करजे हो दीकरी. सासरे० ७

देराणी जेठाणीथी संपीने रे'वुं
लडवा लायक कांइ के'ण न के'वुं;
से'वुं कोइ बोले जेवुं तेवुं हो दीकरी. सासरे० ८ ॥

गंभीर थइने गुणदाब्बे गणाजे,
लडाइ टंटाथी वा'ली बेमळी थाजे;
सद्गुण शांतीथी शाणी सा'जे हो दीकरी. सासरे० ९ ॥

पतीथो प्यारुं कांइ गणीशमां क्यारे,
करजे तरत काम मुख जे उचारे;
हुकममां रे'वुं हाजर तारे हो दीकरी. सासरे० १० ॥

वढवाड करवी नहीं वा'ली कोइ वारे,
उच्चार करीश मां सामो लगारे;
क्रोध करे जो कंथ क्यारे हो दीकरी. सासरे० ११ ॥

स्वामी वृत्तीने रोज अनुकूळ रे'वुं,
पुज्य गणीने वचन हलकुं न के'वुं;
नाखुशीनुं न कारण देवुं हो दीकरी. सासरे० १२ ॥

संसार समुद्रमां नावीक छे,
बे'नी ताराथी एने बोज वधु छे;
तेनी मददगार तुं छे हो दीकरी. सासरे. १३ ॥

अमे अखार सूधी तूजने पाळी,
 परणाव्या पळी छे सासारिये वळावी;
 भरतार ताराने जळावी हो दीकरी. सासरे० १४ ॥
 तेने दुःखे रे डाही तारे रीबावुं,
 एनी च्छाने जाधिन आखो जव थावुं;
 सारुं सृष्टीमां तेनुं चा'वुं, हो दोकरी, सासरे० १५ ॥
 स्वामीनी साथे शाणो कजीयो न करवो,
 बोल कदापी बांडो मुख ना उचरवो;
 सागर संसार साथे तरवो हो दोकरी सासरे० १६ ॥
 कजीयो न करवो बे'नी कंथनी जोडे,
 आभूषणो न मागो अवरनो होडे,
 अघटित लालच स्नेह वोडे हो दोकरी. सासरे० १७ ॥
 अवरनुं सारुं जोड घरमां न लडवुं,
 कजीयाळी थडने बे'नी क्रोधे न चडवुं;
 कंथने के'वुं नहीं कडवुं हो दोकरी. सासरे० १८ ॥
 पाडोशी साथे प्रीती राखवी सारी,
 शियळ शृंगार शाणी सरोरे धारी;
 ए रीते किर्ति वधे तारी हो दीकरी, सासरे० १९ ॥
 शीख वचन" शाणी अमारुं एवुं,
 रिद्धे राजेंद्र" बे'नी ए राते रे'वुं;
 लळु" जायक पद लेवुं हो दीकरी. सासरे० २० ॥

कामि हरामिनि सोवत धारि तुं फोगट रोज फर्यो बनि क,
 नामि न वो'रि कदि वसुधामहि रोज रल्यो रखडी बदना
 हाल भुंडे जटकयो जव मांहि कदि नाहि गुणकथ्याशिव
 लेश लिधोनहिंलाभ "लल्लु" उलटीमुडिगांठतणीघणीवामी
 को' दिन खूशि थयो न खरोकदि संततणी पगमांति
 पाप अपार कर्मा जगमां नहि दानत को'दिन छोडो
 रोज कुटी कुथली सहुनी बहु निंदित काम कर्मा
 लेशलिधोनहिंलाभ "लल्लु" उलटीमुडिगांठतणीघणीवामी
 को' दिन शांत बन्यो नहि भ्रातसुजानविद्वाननिपासधि
 धारिअति अजिमान तुं अंतर मांथिवुरी मति को'दि नवामी;
 मेल तज्यो नाहि तें मननो न भज्या कदि अंतर अंतरजागी,
 लेशलिधोनहिंलाभ "लल्लु" उलटीमुडिगांठतणीघणीवामी.
 लक्ष्मि मळी मुजने हुं रुडोसहुतो मुजथि डरशे शिर नामी,
 धारि अपार सत्ता हुं करुं बहु हुंथिज आजगनी स्थितोजामी;
 सर्व त हुं बुडुं हुं करुं तो पण आंख जंची करशे न हुं सामी,
 लेशलिधोनहिंलाभ "लल्लु" उलटीमुडीगांठतणीघणीवामी.
 धारि रल्यो तुं कुनारिनिसाथथयो खुशि तुंविषयामुखयामी,
 दैवति लाज लुंटी धन आपि नराखिजपाण विषे जरिखामी;
 राज राजेंद्र सूरिसुखनि बारि बंध करी धारि धंधहरामी,
 लेशलिधोनहिंलाभ "लल्लु" उलटी मुडीगांठ तणीघणीवामी५

વાંચો ! વાંચો !! અને વાંચો !!!

તૈયાર થાય છે.

સજ્જન છપ્રીશી નામનું પુસ્તક.

કિમ્મત અરધો આનો.

સૂચના.

ગુર્જર, મરુધર, મેવાડ અને માલવાના સ્વ
ધર્મિભાઈને લાસ મળામણ કરવામાં આવે
છે કે, જો તમારે જૈની પુસ્તકો છપાવવાં
હોય, વેચાથી મંગાવવાં હોય અગર જૈનધર્મ
સંબંધી કોઈ પણ વીજ મંગાવવી હોય તો
નીચેને શિરનામે પત્ર લેસવો.

અમદાવાદ. } શાહ લલ્લુ વલ્લયમ
યુનિયન પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ.
મુ. (ટંકશાલ.)

